वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.-295
ISBN 978-93-80353-24-1

श्री शांतिनाथ व्रत

–रचयित्री–

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित संयमवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत प्रकाशित

– प्रकाशक –

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 292943

Website : www.jambudweep.org

E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

चतुर्थ संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
2200 प्रतियाँ	फरवरी 2012	10/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशक एवं सम्पादक :-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

जैनकुल में जन्म लेने वाला प्रत्येक श्रावक इस बात को भलीभांति जानता है कि जैनधर्म में 24 तीर्थंकर भगवान होते हैं। वैसे तो हमेशा से चौबीसों तीर्थंकर का जन्म अयोध्या में तथा निर्वाण सम्मेदशिखर पर्वत से होता है परन्तु इस बार हुण्डावसर्पिणी काल के दोषवश 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियाँ एवं 5 निर्वाणभूमियाँ हो गई हैं।

अयोध्या, श्रावस्ती, वाराणसी, रत्नपुरी आदि जन्मभूमियों की श्रृंखला में ही हस्तिनापुर तीन तीर्थंकरों के (शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ) गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञान ऐसे 4-4 कल्याणकों से पावन-पवित्र है। पूज्य माताजी ने इस पुस्तक में दो व्रतों को संकलित किया है, पहला है-श्री शांतिनाथ व्रत और दूसरा है-नवनिधि व्रत। इसमें हस्तिनापुर में जन्मे भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की पूजन आदि करना है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संयम वर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत प्रकाशित इस पुस्तक का सदुपयोग करके आप भी अपने जीवन को संयमी बनाएँ, यही मंगल प्रेरणा है।

दो शब्द

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

इस संसार में निवास करने वाले सभी प्राणी प्रायः करके इसी बात को जानते हैं कि खाने-पीने से शक्ति प्राप्त होती है परन्तु एकमात्र जैनधर्म ही ऐसा है जिसके माध्यम से हमें यह ज्ञात होता है कि खाने-पीने की अपेक्षा त्याग करने से अधिक शक्ति मिलती है।

जैनशासन में बारह तप बताए गए हैं जिनमें एक अवमौदर्य नाम का तप है जिसका अर्थ है-भूख से कम खाना। इसका कारण यह है कि भूख से कम खाने पर स्वास्थ्य प्रतिकूल नहीं होगा और ध्यान-स्वाध्याय में मनोयोग अच्छी प्रकार से स्थिर हो सकेगा।

इसी प्रकार इस अनादिनिधन शाश्वत धर्म में विभिन्न प्रकार के व्रतों को करने की विधि बताई गई है। जैसे-चारित्र शुद्धि, रोहिणीव्रत, मेघमाला, सोलहकारण, दशलक्षण आदि-आदि। इन व्रतों को करने की उत्तम विधि उपवास है, मध्यम एवं जघन्य में एकाशन एवं अल्पाहार लेकर व्रत कर सकते हैं। न जाने कितने भव्यप्राणी इन व्रतों को करके अपने

आत्मिक बल को वृद्धिंगत करते हैं।

व्रतों की इसी श्रृंखला में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने हमें लगभग सौ नए व्रत बताए हैं जिनमें से अधिकांश व्रत "भगवान पार्श्वनाथ ग्रंथ" में प्रकाशित हो चुके हैं, इसके अतिरिक्त कुछ व्रत समय-समय पर लघुकाय पुस्तकों में प्रकाशित होते रहते हैं। अब यह श्री शांतिनाथ व्रत नामक छोटी सी पुस्तक आपके हाथों में है, इसमें पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर में जन्मे तीर्थंकरों से संबंधित व्रतों की महिमा बताई है। 16वें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ का व्रत करने से अनेक प्रकार के मानसिक, शारीरिक संतापों से मुक्ति प्राप्त करके परम शांति की प्राप्ति होगी तथा नवनिधि व्रत के माध्यम से भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की भक्ति करके अक्षय नवनिधियों से भंडार भरेगा।

इसी छोटी सी पुस्तक में दोनों व्रतों की विधि, पूजा, मंत्र, कथा आदि प्रकाशित हैं, इन व्रतों को विधिपूर्वक करके अपने मनोरथों की सिद्धि करें, यही मंगलकामना है।

तीर्थ विकास की प्रेरिका-जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का

~ःसंक्षिप्त-परिचयः~

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम–क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक

आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण–जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ

हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा—हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?—भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यी बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

विषय-सूची

क्र.	नाम	पृष्ठ सं.
1.	श्री शांतिनाथ व्रत विधि	- 11
	श्री शांतिनाथ व्रत मंत्र	- 13
	श्री शांतिनाथ जिनपूजा	- 15
	शांतिभक्ति	- 24
	तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जीवन दर्शन	- 33
2.	नवनिधिव्रत विधि	- 35
	नवनिधिव्रत पूजा	- 38
	तीर्थंकर श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ का संक्षिप्त परिचय	- 45-48

शांतिनाथ व्रत (शांतिभक्ति व्रत)

व्रत विधि—श्री शांतिनाथ भगवान सोलहवें तीर्थंकर हैं, साथ ही पाँचवें चक्रवर्ती एवं बारहवें कामदेव भी हुए हैं। इस प्रकार ये भगवान तीन पद के धारक महान हुए हैं। श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित शांतिभक्ति साधुगण एवं श्रावकगण सभी में प्रसिद्ध है। उस शांतिभक्ति का ही यह व्रत है। इसमें सोलह काव्य हैं वे सभी एक से एक महिमापूर्ण हैं। उन एक-एक काव्य का आश्रय कर यह व्रत करना चाहिए। इस व्रत के प्रसाद से स्वयं को शांति, सर्व व्याधियों का विनाश एवं सर्व कष्ट,संकट, आपदाओं का निवारण होगा। सर्वत्र मंगल होगा, घर में, परिवार में मंगल, क्षेम होगा, देश में सुभिक्ष होगा, राजा-प्रजा में धार्मिक भावनाएँ बनेंगी व बढ़ेंगी अतः यह व्रत बहुत ही महत्वपूर्ण है।

श्री पूज्यपाद स्वामी, जो कि हजार वर्ष पूर्व हुए हैं, एक समय उनकी नेत्र की ज्योति मंद हो गई, उसी क्षण उन्होंने शांतिनाथ चैत्यालय में बैठकर इस शांतिभक्ति की रचना की, आठवें काव्य को पढ़ते ही **''दृष्टिं प्रसन्नां कुरु''**

बोलते ही उनकी आँख की रोशनी वापस आ गई। इस वाक्य में श्लेषालंकार है कि हे भगवन्! आप मुझ पर अपनी दृष्टि प्रसन्न करो अथवा मुझ पर प्रसन्न होवो अर्थात् मेरी दृष्टि—नेत्र ज्योति, प्रसन्न-स्वच्छ-स्वस्थ-निर्मल करो। ऐसे दो अर्थ होते हैं।

व्रत विधि—इस व्रत को किसी भी माह की शुक्ला अष्टमी से प्रारंभकर लगातार प्रत्येक मास की दो-दो अष्टमी ऐसे 16 अष्टमी तक यह व्रत करना चाहिए। अथवा खुली तिथि में कभी भी कर सकते हैं। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य में एक बार शुद्ध भोजन करना एवं व्रत के दिन शांतिभक्ति का 16 बार या कम से कम एक बार पाठ करना है।

व्रत पूर्ण कर उद्यापन में शांतिविधान करना, भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराना, शांति भक्ति का 16 दिन अखंड पाठ करना आदि, अपनी शक्ति के अनुसार 16-16 उपकरण मंदिर में भेंट करना आदि है। व्रत पूर्ण कर भगवान की चार कल्याणक भूमि हस्तिनापुर एवं निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर की वंदना करना चाहिए।

व्रतों के मंत्र निम्न प्रकार हैं–

समुच्चय मंत्र–

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सर्वशांतिकराय श्रीशान्तिनाथाय नमः।

प्रत्येक 16 मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं संसारदुःखभीतभव्यगणशरण्याय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं सर्वविघ्नशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं प्रणतजनकष्टनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं स्तोतॄणां मृत्युंजयपदप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं चरणाम्बुजस्तुतिकर्तृणां सर्वरोगविनाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं स्तवनप्रसादात् स्तोतॄणां अचिन्त्यसारसौख्य-प्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं चरणकमलाश्रितजनसर्वपापप्रणाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं स्वपादपद्माश्रयिशान्त्यर्थिभाक्तिकानां दृष्टिप्रसन्न-विधायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं शीलगुणव्रतसंयमपात्राय श्रीशांतिनाथाय नमः।**

10. **ॐ ह्रीं पंचमचक्रिषोडशतीर्थंकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं अशोकवृक्षाद्यष्टप्रातिहार्यसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
12. **ॐ ह्रीं सर्वगणाय स्तुतिपाठकाय मह्यं च परमशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
13. **ॐ ह्रीं शक्रादिभिः स्तुतपादपद्माय सततशान्तिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
14. **ॐ ह्रीं संपूजक-प्रतिपालक-यतीन्द्रगण-देश-राष्ट्र-पुर-नृपतिगण-शांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
15. **ॐ ह्रीं क्षेम-धार्मिकनृपति-समयसमयवृष्टिकारकाय व्याधिदुर्भिक्ष-चौरिमारिकष्टनिवारकाय सर्वसौख्यकर-धर्मचक्रप्रवर्तकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
16. **ॐ ह्रीं केवलज्ञानभास्कर-जगत् शांतिकारकवृषभादि तीर्थंकरसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।**

भगवान शांतिनाथ जिनपूजा

स्थापना –गीता छंद

हे शांतिजिन! तुम शांति के, दाता जगत् विख्यात हो।
इस हेतु मुनिगण आपके, पद में नमाते माथ को।।
निज आत्मसुखपीयूष को, आस्वादते वे आप में।
इस हेतु प्रभु आह्वान विधि से, पूजहूँ नत माथ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –गीता छंद

चिरकाल से बहुप्यास लागी, नाथ! अब तक ना बुझी।
इस हेतु जल से तुम चरण युग, जजन की मनसा जगी।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप शीतल हेतु भगवन्! बहुत का शरणा लिया।
फिर भी न शीतलता मिली, अब गंध से पद पूजिया।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुबार मैं जन्मा मरा, अब तक न पाया पार है।
अक्षय सुपद के हेतु अक्षत, से जजूँ तुम सार है।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली बकुल आदिक, पुष्प ले पूजा करूँ।
मनसिजविजेता तुम जजत, निज आत्मगुणपरिचय करूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भूख व्याधी पिंड लागी, किस विधी मैं छूटहूँ।
पकवान नानाविध लिये, इस हेतु ही तुम पूजहूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानतम दृष्टी हरे, निज ज्ञान होने दे नहीं।
इस हेतु दीपक से जजूँ, मन में उजेला हो सही।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्मबैरी संग लागे, एक क्षण ना छोड़ते।
वर धूप अग्नी संग खेते, दूर से मुख मोड़ते।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल मोक्ष की अभिलाष लागी, किस तरह अब पूर्ण हो।
इस हेतु फल से तुम जजूँ, सब विघ्न बैरी चूर्ण हों।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल रत्नत्रय निधी की, मैं करूँ अब याचना।
तुम अर्घ्य लेकर पूजते ही, पूर्ण होगी कामना।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतिनाथ पदकंज में, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा मैं करूँ, मिटे सकल भव खेद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

लाल कमल नीले कमल, पुष्प सुगंधित सार।
जिनपद पुष्पांजलि करूँ, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद–

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हरषाई।।
इन्द्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां श्रीशांतिनाथजिनगर्भ-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, ज्येष्ठवदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निज माथ, जिनवर चरणकमल में।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनजन्म-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु आप, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तप कल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनदीक्षा-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्य धुनी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां श्रीशांतिनाथजिनकेवलज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त किया निर्वाण, ज्येष्ठ वदी चौदश में।
आत्यंतिक सुखशांति, प्राप्त किया उस क्षण में।।
महामहोत्सव इंद्र, करते बहुवैभव से।
हम पूजें तुम पाद, छुटें सभी भवदुःख से।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनमोक्ष-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–दोहा–

हस्तिनागपुर में हुये, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
सम्मेदाचल मोक्ष थल, गाऊँ प्रभु गुणगान।।1।।

–स्रग्विणी छंद –

मैं नमूँ मैं नमूँ शांति तीर्थेश को।
नाथ मेरे हरो सर्व भवक्लेश को।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।2।।

विश्वसेन प्रिया मात ऐरावती।
वर्ष इक लाख आयू कनक वर्ण ही।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।3।।

देह चालीस धनु चिन्ह मृग ख्यात है।
जन्म भू हस्तिनापूरि विख्यात है।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।4।।

नाथ के समवसृति में सभा मध्य ये।
साधु बासठ सहस मूलगुणधारि थे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।5।।

चक्र आयुध प्रमुख गणपती श्रेष्ठ थे।
ऋद्धि संयुक्त छत्तीस मुनिज्येष्ठ थे।।

पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।6।।

आर्यिका हरीषेणा प्रधाना तथा।
साठ हज्जार त्रय सौ सभी आर्यिका।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।7।।

दोय लक्षा सुश्रावक प्रभू भाक्तिका।
चार लक्षा कहीं श्राविका सद्व्रता।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।8।।

सौख्य हेतू भटकता फिरा विश्व में।
किंतु पाई न साता कहीं रंच मैं।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।9।।

नाथ ऐसी कृपा कीजिए भक्त पे।
शुद्ध सम्यक्त्व की प्राप्ति होवे अबे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।10।।

स्वात्म पर का मुझे भेद विज्ञान हो।
पूर्ण चारित्र धारूँ जो निष्काम हो।।

पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।11।।

पूर्ण शांती जहाँ पे वहीं वास हो।
भक्त ये आपका आपके पास हो।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना।
फेर होवे न संसार में आवना।।12।।

–दोहा –

तीर्थंकर चक्री मदन, तीनों पद के ईश।
पूर्ण ''ज्ञानमति'' हेतु मैं, नमूँ नमूँ नतशीश।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा –

शांतिनाथ की अर्चना, हरे सकल दुःख दोष।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे स्वात्मसुखतोष।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

शांतिभक्ति

(हिन्दी पद्यानुवाद एवं मंत्र सहित)

शार्दूलविक्रीडित छंद –

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् ! पादद्वयं ते प्रजाः।
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः, संसारघोरार्णवः।।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकर-व्याकीर्णभूमण्डलो।
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिल-च्छायानुरागं रविः।।1।।

भगवन्! सब जन तव पद युग की, शरण प्रेम से नहिं आते।
उसमें हेतु विविध दुःखों से, भरित घोर भववारिधि है।।
अति स्फुरित उग्र किरणों से, व्याप्त किया भूमंडल है।
ग्रीषम ऋतु रवि राग कराता, इन्दुकिरण छाया जल में।।1।।

ॐ ह्रीं संसारदुःखभीतभव्यगणशरण्याय श्रीशांतिनाथाय नमः।

क्रुद्धाशीविषदष्टदुर्जयविष-ज्वालावलीविक्रमो।
विद्याभेषजमन्त्रतोयहवने-र्याति प्रशांतिं यथा।।
तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुग-स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्।
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा, शाम्यन्त्यहो! विस्मयः।।2।।

क्रुद्धसर्प आशीविष डसने, से विषाग्नि युत मानव जो।
विद्या औषध मंत्रित जल, हवनादिक से विष शांति हो।।

वैसे तव चरणाम्बुज युग, स्तोत्र पढ़े जो मनुज अहो।
तनु नाशक सब विघ्न शीघ्र, अति शान्त हुए आश्चर्य अहो।।2।।
ॐ ह्रीं सर्वविघ्नशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

संतप्तोत्तमकांचन क्षितिधर-श्रीस्पर्द्धिगौरद्युते।
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्, पीडाः प्रयान्ति क्षयं।।
उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशत-व्याघातनिष्कासिता।
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा, शीघ्रं यथा शर्वरी।।3।।

तपे श्रेष्ठ कनकाचल की, शोभा से अधिक कान्तियुत देव!
तव पद प्रणमन करते जो, पीड़ा उनकी क्षय हो स्वयमेव।।
उदित रवी की स्फुट किरणों से, ताड़ित हो झट निकल भगे।।
जैसे नाना प्राणी लोचन, द्युतिहर रात्री शीघ्र भगे।।3।।
ॐ ह्रीं प्रणतजनकष्टनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजया-दत्यन्तरौद्रात्मकान्।
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो, जीवस्य संसारिणः।।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना, कालोग्रदावानला-
न्नस्याच्चेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम्।।4।।

त्रिभुवन जन सब जीत विजयि बन, अति रौद्रात्मक मृत्यूराज!
भव-भव में संसारी जन के, सन्मुख धावे अति विकराल।।

किस विध कौन बचे जन इससे, काल उग्र दावानल से।
यदि तव पाद कमल की स्तुति, नदी बुझावे नहीं उसे।।4।।
ॐ ह्रीं स्तोतॄणां मृत्युंजयपदप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

लोकालोकनिरन्तरप्रवितत-ज्ञानैकमूर्ते! विभो!
नानारत्नपिनद्धदंडरुचिर-श्वेतातपत्रत्रय!।।
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः, शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदा-द्वन्या यथा कुञ्जराः।।5।।

लोकालोक निरन्तर व्यापी, ज्ञानमूर्तिमय शान्ति विभो।
नाना रत्न जटित दण्डे युत, रुचिर श्वेत छत्रत्रय है।।
तव चरणाम्बुज पूतगीत रव, से झट रोग पलायित हैं।
जैसे सिंह भयंकर गर्जन, सुन वन हस्ती भगते हैं।।5।।
ॐ ह्रीं चरणाम्बुजस्तुतिकर्तॄणां सर्वरोगविनाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

दिव्यस्त्रीनयनाभिराम! विपुल-श्रीमेरुचूडामणे!
भास्वद् बालदिवाकरद्युतिहर-प्राणीष्टभामंडल!।।
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं, त्यक्तोपमं शाश्वतं।
सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगल-स्तुत्यैव संप्राप्यते।।6।।

दिव्यस्त्रीदृगसुन्दर विपुला, श्रीमेरू के चूड़ामणि।
तव भामंडल बाल दिवाकर, द्युतिहर सबको इष्ट अति।।

अव्याबाध अचिंत्य अतुल, अनुपम शाश्वत जो सौख्य महान्।
तव चरणारविंदयुगलस्तुति, से ही हो वह प्राप्त निधान।।6।।
ॐ ह्रीं स्तवनप्रसादात् स्तोतॄणां अचिन्त्यसारसौख्यप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः, श्रीभास्करो भासयं-
स्तावद्-धारयतीह पंकजवनं, निद्रातिभारश्रमम्।।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्-न स्यात्प्रसादोदय-
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति, प्रायेण पापं महत्।।7।।

किरण प्रभायुत भास्कर भासित, करता उदित न हो जबतक।
पंकज वन नहिं खिलते निद्रा, भार धारते हैं तब तक।।
भगवन्! तव चरणद्वय का हो, नहीं प्रसादोदय जब तक।
सभी जीवगण प्रायः करके, महत् पाप धारें तब तक।।7।।
ॐ ह्रीं चरणकमलाश्रितजनसर्वपापप्रणाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

शांतिं शान्तिजिनेन्द्र! शांतमनस-स्त्वत्पादपद्माश्रयात्।
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः, शांत्यर्थिनः प्राणिनः।।
कारुण्यान्मय भाक्तिकस्य च विभो! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः, शांत्यष्टकं भक्तितः।।8।।

शान्ति जिनेश्वर! शान्तचित्त से, शान्त्यर्थी बहु प्राणीगण।
तव पादाम्बुज का आश्रय ले, शान्त हुए हैं पृथिवी पर।।
तव पदयुग की शान्त्यष्टकयुत, स्तुति करते भक्ती से।
मुझ भाक्तिक पर दृष्टि प्रसन्न, करो भगवन्! करुणा करके।।8।।
ॐ ह्रीं स्वपादपद्माश्रयिशान्त्यर्थिभाक्तिकानां दृष्टिप्रसन्नविधायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम्।।9।।

शशि सम निर्मल वस्त्र शांतिजिन, शीलगुण व्रत संयम पात्र।
नमूँ जिनोत्तम अंबुजदृग को, अष्टशतार्चित लक्षणगात्र।।9।।
ॐ ह्रीं शीलगुणव्रतसंयमपात्राय श्रीशांतिनाथाय नमः।

पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्र-नरेन्द्रगणैश्च।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि।।10।।

चक्रधरों में पंचमचक्री, इन्द्र नरेन्द्र वृंद पूजित।
गण की शांति चहूँ षोडश तीर्थंकर नमूँ शांतिकर नित।।10।।
ॐ ह्रीं पंचमचक्रिषोडशतीर्थंकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि-र्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः।।11।।

तरु अशोक सुरपुष्पवृष्टि, दुंदुभि दिव्यध्वनि सिंहासन।
चमर छत्र भामंडल ये अठ, प्रातिहार्य प्रभु के मनहर।।11।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षाद्यष्टप्रातिहार्यसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।

तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रं, शांतिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च।।12।।

उन भुवनार्चित शांतिकरं, शिर से प्रणमूँ शांति प्रभु को।
शांति करो सब गण को मुझको, पढ़ने वालों को भी हो।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वगणाय स्तुतिपाठकाय मह्यं च परमशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

येभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः।।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः।
तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवंतु।।13।।

मुकुटहारकुंडल रत्नों युत, इन्द्रगणों से जो अर्चित।
इन्द्रादिक से सुरगण से भी, पादपद्म जिनके संस्तुत।।
प्रवरवंश में जन्में जग के, दीपक वे जिन तीर्थंकर।
मुझको सतत शांतिकर होवें, वे तीर्थेश्वर शांतीकर।।13।।

ॐ ह्रीं शक्रादिभिः स्तुतपादपद्माय सततशान्तिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।14।।

संपूजक प्रतिपालक जन, यतिवर सामान्य तपोधन को।
देशराष्ट्र पुर नृप के हेतू, हे भगवन्! तुम शांति करो।।14।।

ॐ ह्रीं संपूजक-प्रतिपालक-यतीन्द्रगण-देश-राष्ट्र-पुर-नृपतिगणशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

क्षेमं सर्वप्रजानां, प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वर्षतु, मघवा व्याधयो यांतु नाशं।।
दुर्भिक्षं चौरिमारी, क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं, प्रभवतु सततं, सर्वसौख्यप्रदायि।।15।।

सभी प्रजा में क्षेम नृपति, धार्मिक बलवान जगत् में हो।
समय-समय पर मेघवृष्टि हो, आधि व्याधि का भी क्षय हो।।
चौर मारि दुर्भिक्ष न क्षण भी, जग में जन पीड़ा कर हो।
नित ही सर्व सौख्यप्रद जिनवर, धर्मचक्र जयशील रहो।।15।।

ॐ ह्रीं क्षेम-धार्मिकनृपति-समयसमयवृष्टिकारकाय व्याधि-दुर्भिक्षचौरिमारि-कष्टनिवारकाय सर्वसौख्यकरधर्मचक्रप्रवर्तकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

प्रध्वस्तघातिकर्माणः, केवलज्ञानभास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शांतिं, वृषभाद्या जिनेश्वराः।।16।।

घातिकर्म विध्वंसक जिनवर, केवलज्ञानमयी भास्कर।
करें जगत में शांति सदा, वृषभादि जिनेश्वर तीर्थंकर।।16।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानभास्कर-जगत् शांतिकारकवृषभादि तीर्थंकर-समन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।

अंचलिका

इच्छामि भंते! संतिभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं पंचमहा-कल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेवेंदमणिमउडमत्थय-महियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहर-रिसिमुणिजइअणगारोव-गूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिममंगलमहा-पुरिसाणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

हे भगवन्! श्री शांतिभक्ति का, कायोत्सर्ग किया उसके।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाहूँ मैं रुचि से।।

अष्टमहा प्रातिहार्य सहित जो, पंचमहाकल्याणक युत।
चौतिस अतिशय विशेष युत, बत्तिस देवेन्द्र मुकुट चर्चित।।

हलधर वासुदेव प्रतिचक्री, ऋषि मुनि यति अनगार सहित।
लाखों स्तुति के निलय वृषभ से, वीर प्रभू तक महापुरुष।।

मंगल महापुरुष तीर्थंकर, उन सबको शुभ भक्ती से।
नित्यकाल मैं अर्चूं पूजूँ, वंदूँ नमूँ महामुद से।।

दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधिलाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण सम्पत्ति होवे।।

शांति मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जगत् शान्तिकराय
सर्वोपद्रवशान्तिम् कुरु कुरु ह्रीं नमः।

सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ का जीवन दर्शन

(व्रत के दिन इस परिचय को पढ़ें तथा इसका शिलालेख बनवाकर मंदिर में भी लगवाएँ)

जन्मभूमि -हस्तिनापुर (जि.मेरठ) उ.प्र.

पिता	-महाराजा विश्वसेन	**माता**	-महारानी ऐरावती
वर्ण	-क्षत्रिय	**वंश**	-कुरुवंश
देहवर्ण	-तप्त स्वर्ण सदृश	**चिन्ह**	-हरिण
आयु	-एक लाख वर्ष	**अवगाहना**	-एक सौ साठ हाथ
गर्भ	-भाद्रपद कृ. 7	**जन्म**	-ज्येष्ठ कृ. 14
दीक्षा	-ज्येष्ठ कृ. 14	**दीक्षा वन**	-सहस्राम्रवन
वृक्ष	- नंद्यावर्त वृक्ष		

प्रथम आहार - मंदिरपुर के राजा सुमित्र द्वारा (खीर)

केवलज्ञान -पौष शु.10 **मोक्ष** -ज्येष्ठ कृ. 14

मोक्ष स्थल - सम्मेदशिखर पर्वत

समवसरण में चतुर्विध संघ

गणधर	-श्री चक्रायुध आदि 36	**मुनि**	-बासठ हजार
गणिनी	-आर्यिका हरिषेणा	**आर्यिका**	-साठ हजार तीन सौ
श्रावक	-दो लाख	**श्राविका**	-चार लाख
जिनशासन यक्ष	- गरुड़देव	**यक्षी**	-महामानसी देवी

भगवान शांतिनाथ वर्तमान वीर नि.सं. 2534 से पौन पल्य 65, 86, 534 वर्ष पहले मोक्ष गए हैं।

–अर्घ्य-गीता छंद–

अनमोल रत्नत्रय निधी की, मैं करूँ अब याचना।
वर अर्घ अर्पत ''ज्ञानमती'' से, पूर्ण होगी कामना।।
श्री शांनिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी यांचा नहीं।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवनिधि व्रत

हस्तिनापुर में भगवान शांतिनाथ, भगवान कुंथुनाथ एवं भगवान अरनाथ ये तीन तीर्थंकर जन्मे हैं। ये तीनों ही तीर्थंकर तीन-तीन पद के धारक हुए हैं। ये ही इन तीनों तीर्थंकर भगवन्तों की एवं हस्तिनापुर तीर्थ की विशेषता है। इन तीनों तीर्थंकरों के तीन-तीन पदों की अपेक्षा यह 'नवनिधि व्रत' किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से नवनिधि-ऋद्धि से भंडार भरेगा। सर्व लौकिक संपत्ति के साथ-साथ अलौकिक आध्यात्मिक संपत्ति भी प्राप्त होगी।

व्रत की उत्तम विधि–आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास में आष्टान्हिक पर्व में एक दिन पहले सप्तमी से पूर्णिमा तक नवदिन व्रत करना–उत्तम विधि नव उपवास करना, मध्यम में अल्पाहार और जघन्य में एकाशन–एक बार शुद्ध भोजन करना है। व्रत के दिन भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ तीर्थंकरों की समुच्चय पूजन या पृथक्-पृथक् पूजन करके उनके जीवन चरित्र को पढ़ना है।

अथवा लघु व्रत विधि–इस व्रत में लगातार 9 माह तक प्रत्येक माह में तिथि का कोई नियम न करके एक-एक

व्रत कर लेना, यह सर्वजघन्य विधि है। ऐसे मात्र नव व्रत करना है।

मंत्र इस प्रकार हैं–

समुच्चय मंत्र–

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरचक्रवर्तिकामदेवपदधारक शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथतीर्थंकरेभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं अर्हं षोडशतीर्थंकरपदप्राप्तश्रीशांतिनाथाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं अर्हं पंचमचक्रवर्तिपदप्राप्तश्रीशांतिनाथाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशकामदेवपदप्राप्तश्रीशांतिनाथाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं अर्हं सप्तदशतीर्थंकरपदप्राप्तश्रीकुंथुनाथाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं अर्हं षष्ठचक्रवर्तिपदप्राप्तश्रीकुंथुनाथाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशकामदेवपदप्राप्तश्रीकुंथुनाथाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशतीर्थंकरपदप्राप्तश्रीअरनाथाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं अर्हं सप्तमचक्रवर्तिपदप्राप्तश्रीअरनाथाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशकामदेवपदप्राप्तश्रीअरनाथाय नमः।**

व्रत पूर्ण करके तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवान की या तीनों तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करावें। हस्तिनापुर तीर्थ और सम्मेदशिखर तीर्थ की वंदना करके श्री शांतिनाथ

का सोलह दिन का महाविधान करके उद्यापन पूर्ण करें और भी अपनी शक्ति के अनुसार 9-9 उपकरण आदि मंदिर में प्रदान करें। मुनि-आर्यिका आदि गुरुओं को आहारदान, पिच्छी-कमण्डलु, शास्त्र दान देवें। इस विधि से इस 'नवनिधि व्रत' को करने वाले नियम से संसार के समस्त सुखों का अनुभव कर चक्रवर्ती, कामदेव, तीर्थंकर आदि पदों को प्राप्त कर अक्षय-अतीन्द्रिय मोक्षसुख को प्राप्त करेंगे, यही इस व्रत का फल है।

सर्वसिद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

भगवान शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर पूजा

स्थापना –नरेन्द्र छंद

श्रीमन् शांति कुंथु अर जिनवर, तीर्थंकर पदधारी।
चक्रवर्ति सम्राट् हुए ये, कामदेव पदधारी।।
तिहुँजग भ्रमण विनाशन हेतू, इनका यजन करूँ मैं।
आह्वानन स्थापन करके, सन्निधिकरण करूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –नरेन्द्र छंद

तीनलोक भर जाय नाथ मैं, इतना नीर पिया है।
फिर भी तृप्ति न हुई अतः अब, जल से धार दिया है।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में बहु देह धरे मैं, उनसे शांति न पाई।
इसी हेतु चंदन से पूजूँ, मिले शांति सुखदाई।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने आत्मसौख्य मुझ, खंड खंड कर रक्खा।
शालि पुंज से जजूँ अखंडित, सौख्य मिले यह इच्छा।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने तीन जगत को, निज के वश्य किया है।
उसके जेता आप अतः मैं, अर्पण पुष्प किया है।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादी से क्षुध व्याधी, भोजन से नहिं मिटती।
व्यंजन सरस बनाकर जिनपद, अर्पण से वह नशती।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर ने तीन जगत को, अंध समान किये हैं।
दीपक से तुम आरति करके, ज्ञान उद्योत हिये है।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ये संग लगे हैं, इनका नाश करूँ मैं।
तुम सन्निधि में धूप जलाकर, सुरभित धूम्र करूँ मैं।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत कुदेव नमन कर मैंने, अविनश्वर फल चाहा।
फिर भी आश हुई नहिं पूरी, अतः आप ढिग आया।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, स्वर्णथाल भर लाया।
सर्वोत्तम फल पाने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने आया।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांति कुंथु अर नाथ के, चरणों में त्रय बार।
शांतीधारा मैं करूँ, मिले शांति भंडार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल कमल चंपा जुही, सुरभित हरसिंगार।
तुम पद पुष्पांजलि करूँ, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

तीर्थक्षेत्र को अर्घ

–दोहा–

शांति कुंथु अरनाथ के, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
हस्तिनागपुर में हुए, चार कल्याण महान ।।1।।

ॐ ह्रीं हस्तिनागपुरे गर्भजन्मतपोज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथु-अरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति कुंथु अरनाथ ने, पाया पद निर्वाण।
श्री सम्मेदाचल जजूँ, सिद्धक्षेत्र सुखदान।।2।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरात् निर्वाणपदप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

–दोहा–

हस्तिनागपुर में हुये, काश्यप गोत्र ललाम।
नमूँ नमूँ नत शीश मैं, शांति कुंथु अर नाम।।1।।

–शंभु छंद–

जय शांतिनाथ तुम तीर्थंकर, चक्री औ कामदेव जग में।
माता ऐरावति धन्य हुईं, पितु विश्वसेन भी धन्य बने।।

भादों वदि सप्तमि गर्भ बसे, जन्में वदि ज्येष्ठ चतुर्दशि में।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित पौष दशमि केवली बने।।2।।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि में, शिवपद साम्राज्य लिया उत्तम।
इक लाख वर्ष आयू चालिस, धनु तुंग चिह्नमृग तनु स्वर्णिम।।
हे शांतिनाथ! तीनों जग में, इक शांती के दाता तुमही।
इसलिये भव्यजन तुम पद का, आश्रय लेते रहते नितही।।3।।
श्री कुंथुनाथ पितु सूरसेन, माँ श्रीकांता के पुत्र हुए।
श्रावणवदि दशमी गर्भ बसे, वैशाख सितैकम जन्म लिये।।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित चैत्र तीस केवलज्ञानी।
वैशाख सितैकम मुक्ति बसे, पैंतिस धनु तुंग देह नामी।।4।।
पंचानवे सहसवर्ष आयू, स्वर्णिम तनु छाग चिह्न प्रभु को।
सत्रहवें तीर्थंकर छट्ठे, चक्रेश्वर कामदेव तनु हो।।
तुम पदपंकज का आश्रय ले, भविजन भववारिधि तरतेहैं।
निज आत्मसौख्य अमृत पीकर, अविनश्वर तृप्ती लभते हैं।।5।।
अरनाथ! सुदर्शन पिता आप, माँ ख्यात मित्रसेना जग में।
फाल्गुन सित तीज गर्भ आये, मगसिर सित चौदश को जन्में।।
मगसिर सित दशमी दीक्षा ले, कार्तिक सित बारस ज्ञान उदय।
प्रभु चैत्र अमावस्या शिवपद, धनु तीस तुंग तनु सुवरणमय।।6।

चौरासी सहसवर्ष आयू, प्रभु चिह्न मीन से जग जानें।
हम भी तुम पद पंकज में नत, सब रोग शोक संकट हानें।।
जय जय रत्नत्रय तीर्थंकर, जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर।
जय जय मंगलकर लोकोत्तम, जय शरणभूत हे परमेश्वर।।7।।
मैं शुद्ध बुद्ध हूँ सिद्ध सदृश, मैं गुण अनंत के पुञ्जरूप।
मैं नित्य निरंजन अविकारी, चिच्चिंतामणि चैतन्यरूप।।
निश्चयनय से प्रभु आप सदृश, व्यवहार नयाश्रित संसारी।
तुम भक्ती से यह शक्ति मिले, निज संपत्ति प्राप्त करूँ सारी।।8।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

तुम पद भक्ति प्रसाद से, मिले यही वरदान।
'ज्ञानमती' निधि पूर्ण हो, मिले अंत निर्वाण।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

तीर्थंकर श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ का संक्षिप्त परिचय

जैनधर्म में भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर स्वामीपर्यंत 24 तीर्थंकर हुए हैं। उनमें से 16वें, 17वें एवं 18वें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ ने हस्तिनापुर में जन्म लिया। उनके संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत हैं—

तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवान—हस्तिनापुर के महाराजा विश्वसेन की महारानी ऐरादेवी ने भाद्रपद कृ. सप्तमी को सोलह स्वप्नदर्शनपूर्वक भगवान शांतिनाथ को गर्भ में धारण किया तथा ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी को पुत्ररत्न को जन्म दिया।

1008 शुभ लक्षणों से संयुक्त भगवान ने ज्येष्ठ कृ. 14 को दीक्षा धारण की, पौष सुदी 10 को उन्हें दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हुई तथा आयु के अंत में सम्मेदशिखर पर्वत से ज्येष्ठ कृ. 14 को मोक्षधाम

को प्राप्त कर लिया। ये शांतिनाथ भगवान 16वें तीर्थंकर होने के साथ ही पाँचवें चक्रवर्ती और बारहवें कामदेव पद के भी धारक हुए हैं। इन भगवान के गर्भ-जन्म-तप एवं केवलज्ञान ये चार कल्याणक हस्तिनापुर नगरी में हुए हैं।

इस प्रकार एक लाख वर्ष की आयु के धारक, चालीस धनुष उत्तुंग स्वर्णवर्णी भगवान शांतिनाथ हम और आप सभी का कल्याण करें।

तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ भगवान—हस्तिनापुर नगर के महाराजा सूरसेन की महारानी श्रीकांता ने देवों द्वारा की हुई रत्नवृष्टि आदि पूजा को प्राप्त करते हुए श्रावण कृ. 10 के दिन सर्वार्थसिद्धि के अहमिन्द्र को गर्भ में धारण किया तथा नवमास व्यतीत होने पर वैशाख शुक्ला एकम् को पुत्ररत्न को जन्म दिया। सौधर्म आदि इन्द्रों ने आकर सुमेरुपर्वत पर जन्माभिषेक करके बालक का 'कुंथुनाथ' नाम रखा।

पंचानवे हजार वर्ष की आयु के धारक, पैंतीस

धनुष उत्तुंग तथा स्वर्णवर्णी भगवान कुंथुनाथ को वैशाख शुक्ला एकम् को चक्रवर्ती की लक्ष्मी मिली एवं वैशाख शु. एकम् को ही उन्होंने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ग्रहण की। पुनः 16 वर्ष घोर तप करने के पश्चात् उन्हें चैत्र शु. 3 को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हुई।

भगवान की आयु एक माह शेष रहने पर वे सम्मेदशिखर पर प्रतिमायोग से विराजमान हो गये। वहाँ उन्हें वैशाख शु. एकम् को सिद्धपद की प्राप्ति हो गई।

ये कुंथुनाथ भगवान 17वें तीर्थंकर होने के साथ ही छठे चक्रवर्ती और 13वें कामदेव पद के धारक थे, इनके भी गर्भ-जन्म-तप एवं ज्ञानकल्याणक हस्तिनापुर की पावन धरती पर हुए हैं।

तीर्थंकर श्री अरहनाथ भगवान—भगवान शांतिनाथ एवं भगवान कुंथुनाथ के पश्चात् इसी हस्तिनापुर नगरी में 18वें तीर्थंकर भगवान अरहनाथ ने जन्म लिया। महाराजा सुदर्शन की महारानी

मित्रसेना ने फाल्गुन कृ. 3 को गर्भधारण करके मगसिर कृ. 14 को तीर्थंकर शिशु को जन्म दिया।

कुमार अवस्था के 42 हजार वर्ष बीत जाने पर मगसिर शु. 10 को भगवान ने जैनेश्वरी दीक्षा धारण की पुनः 16 वर्ष व्यतीत होने पर कार्तिक शु. 10 को आम्रवन के नीचे घातिया कर्मों का नाशकर केवलज्ञानी बन गए। आयु के एक माह शेष रहने पर सम्मेदशिखर पर जाकर भगवान ने चैत्र कृ. अमावस्या को मोक्षपद को प्राप्त कर लिया। इन भगवान के भी गर्भ-जन्म-तप एवं ज्ञानकल्याणक हस्तिनापुर में हुए हैं। ये अरहनाथ भगवान 18वें तीर्थंकर सातवें चक्रवर्ती एवं चौदहवें काम देव हुए हैं।

इस प्रकार 84 हजार वर्ष की आयु के धारक, 120 हाथ उत्तुंग, स्वर्णवर्णी भगवान अरहनाथ हम सभी के लिए शिवपथ प्रशस्त करें, यही प्रार्थना है।